INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

रीवा संभाग में ग्रामीण विकास योजनाओं का भौगोलिक अध्ययन

शोधार्थी – भूगोल, मिथुन कुमार साकेत, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा
निर्देशक – डॉ. ध्रुव कुमार द्विवेदी, प्राचार्य, सरस्वती विज्ञान महाविद्यालय, निराला नगर, रीवा (म.प्र.)

सारांश :–

रीवा संभाग में विकास केन्द्रों के निर्धारण के लिए आधारभूत सुविधाओं का होना आवश्यक होता है। इसके साथ–साथ भौगोलिक वातावरण को विकसित करने के लिए आज साधनों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के संबंधों को विकसित करने के लिए जल, स्वच्छता, पक्की सडकों, पक्के मकानों, बिजली और स्वच्छता के वातावरण का अभाव रहता है। इसलिए इन सभी शहरों में आने वाले कूड़े करकट के द्वारा शहरों को विकसित करने के लिए उन्हें व्यवस्थित किया जाता है।

मानव सभ्यता के विकास के शुभारम्भ से कृषिकार्य आम जनमानस के जीवन–यापन का मुख्य साधन रही है। वर्तमान में भी किसी संसाधन के अधिकत्तर जनसंख्या का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय एवं आय कृतित्व का सबसे बड़ा स्रोत माना जाता है। कृषि विकासशील राष्ट्रों में प्रमुख व्यवसायिक संसाधनों के होने के कारण राष्ट्रीय आय का सबसे स्रोत है। लोगों के जीवन यापन एवं रोजगार के साधनों को उपलब्ध कराने के लिए मुख्य साधन माना गया है। फिर भी भारतीय समाज में भारतीय विकास और विदेशी व्यापार का प्रमुख आधार कृषि को माना जाता है। आज भी कृषि को ऐसे राष्ट्रों की ऋण और विकास करने की कुन्जी मानी जा रही है। कृषि विकास के संसाधनों को विकसित करने के लिए विदेशों के आयात निर्यात को विकास की मुख्य साधनों के रूप में जाना जाता है। सम्पूर्ण

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

विकासों को आसीन कर सबसे शक्तिशाली रूपों दूसरे राष्ट्रों के विकास में मुख्य आयाम प्रस्तुत करता है। इसके लिए कृषि व्यवस्था को व्यवस्थित किया जा सकता है। रीवा जिले की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत ग्रामीण और शहरी जनतों को साधन उपलब्ध हो रहे हैं।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। **रीवा संभाग में ग्रामीण विकास योजनाओं का भौगोलिक अध्ययन** के आधार पर जन सामान्य से भी जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य :–

- ग्रामीण विकास योजनाओं का अध्ययन करना।
- विकास योजनाओं को समुचित उन्नति हेतु सहायता निधि के लिए प्रोत्सहन करना।
- सामाजिक आयामों की भूमिका को तय करना।
- भौगोलिक वातावरण को स्वच्छ बनाये रखने में ग्रामीण और शहरी जनता को प्रोत्सहन करना।
- विभिन्न योजनाओं की जानकारी ग्रामीण जन समुदाय तक पहुँचाना जिससे कोई अपनी आवश्यकताओं और जरूरतों के लिए इन योजनाओं से वंचित न हो।
- समाज में होने वाली प्रतिस्पर्धा को और प्रोत्सहित करके उन्हें भी विकास के उच्च स्तर पर लाना।
- गरीब मजदूरों को विकास का लाभ मिले इस हेतु उन्हें प्रोत्साहित करना।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

समस्या :—

रीवा संभाग में ग्रामीण विकास योजनाओं का भौगोलिक अध्ययन आज के समय में इन योजनाओं के द्वारा लोगों तक पहुँचाया जा रहा है किन्तु बीच में बिचौलियों के कारण उन्हें उन योजनाओं का पूर्ण लाभ नहीं मिल पा रहा है। इससे जनता में प्रशासन के प्रति आक्रोश की स्थिति बनी हुई है। इससे समाज में उत्पन्न होने वाले संकट पूर्ण स्थिति के लिए प्रशासन को जबवदेही समझा जा रहा है। इसीलिए विकास के मुख्य स्तर तक ले जाने के लिए इन ग्रामीण जनता तक मूल लाभ पहुँचाया जाता है तो उससे उनके मन और विचारों के प्रति अच्छा व्यवहार उत्पन्न होगा। इस दिशा की ओर सरकार को कदम उठाना चाहिए।

1 नवम्वर 1956 को मध्यप्रदेश राज्य का गठन किया गया है। जो मध्यभारत का यह क्षेत्र है। मध्यप्रदेश पुनर्गठन विधेयक 2000 के तहत 1 नवम्वर 2000 को मध्यप्रदेश एक पृथक अस्तित्व के रूप में सामने आता है। उससे बनाया जाने वाला नया राज्य छत्तीसगढ़ है। यह अविभाजित म.प्र. के 61 जिलों में से पूर्वी म.प्र. के 16 जिलों को नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य में जोड़ा गया है।

समाधान :—

मध्यप्रदेश की वर्तमान भौगोलिक स्थिति 21^0 6′ उत्तरी अक्षांश के लगभग से $26^0$30′ उत्तरी अक्षांश तथा $74^0$9′ पूर्वी देशांतर से $84^0$48′ पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थिति है। इसी कुल क्षेत्रफल 3,08244 वर्ग कि.मी. जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 9.38 प्रतिशत का विकासित क्षेत्र है। इसके पूर्व से पश्चिम तक का विस्तार 870 कि.मी. और उत्तर से दक्षिण 605 कि.मी. के लगभग में स्थित है। इन्हें क्षेत्रफल के विकास के लिए प्रशासन स्तर पर कार्य किये जा रहे हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

मध्यप्रदेश देश के खनिज संपदा बाले राज्यों में माना जाता है। फिर भी यह मध्यप्रदेश विकास की स्तर पर गिना जाता है। इसे वर्ष 2009–10 के दौरान राज्य देश में हीरा ताम्र, अयस्क तथा पायरोफिलाइट के उत्पादन में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यहाँ तक रांक फास्फेट, शेल, डायस्पोर, फायर क्ले के उत्पादन में द्वितीय स्थान पर रहा है। इस प्रकार से यहाँ पर विकास के साधनों को जुटानें में ग्रामीण विकास की अहम भूमिका रही है। यहाँ चूने का पत्थर एवं ओकर खनिज उत्पादन में तृतीय स्थान पर रहा है। कोयला उत्पादन में राज्य चतुर्थ स्थान पर रहा है।

किसी क्षेत्र विशेष रूपों में यह दीर्घकालीन मौसमी दशाओं के समग्र रूप को विकसित करती है। यहाँ तक मध्यप्रदेश की जलवायु सामान्यतः मानसूनी होती है। यहाँ तक कर्क रेखा द्वारा प्रदेश को दो बराबर भागों में विभाजित किया जा रहा है। राज्य के विशाल आकार के कारण राज्य के विभिन्न भागों में भिन्न–भिन्न प्रकार की जलवायु और दशाएँ मिलती है। यही कारण है कि जलवायु की भिन्नता के कारण मध्यप्रदेश को चार भागों में बाटा गया है।

- बघेलखण्ड पठार भाग
- विन्ध्य पर्वतीय भाग
- उत्तर का मैदानी भाग
- नर्मदा घाटी
- मालवा पठार

मध्यप्रदेश में सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र पचमढ़ी है। जहाँ लगभग 213.3 सेमी. वर्षा होती है। इस प्रकार से म.प्र. के विन्ध्य क्षेत्र में बंगाल की खाड़ी और अरब सागर दोनों आने वाले मानसूनों के कारण वर्षा होती है। मध्यप्रदेष

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

की ऋतुओं को जलवायु के अधिक ग्रीष्म, वर्षा और शीत ऋतुओं आदि में अलग–अलग प्रकार से पाई जाती है।

भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक वन में पाया जाता है। मध्यप्रदेश वन विभाग के प्रशासनिक प्रतिवेदन 2009 के अनुसार राज्य में वनों राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रों में देश के कुल वन क्षेत्र का 12.4 प्रतिशत स्थित है।

विन्ध्य पर्वत ऋखलाओं के मध्य स्थित अपनी भौगोलिक संरचना के आधार पर सतना जिला का विशिष्ट रूप से फेक्ट्र, उद्योगों के लिए जाना जाता है। इस मार्ग पर अनेक व्यावसायिक नगरों के विकसित होने के कारण रीवा और सतना का विकास स्तर आभी इतना नहीं किन्तु कुछ न कुछ मात्रा में सीमेन्ट फेक्ट्री का विकास आम जनमानस के लिए बहुआयामी कदम है।

विकास के साधनों में निर्धनता व बेरोजगारी का बहुत असर दिखाई देता है। इससे विकास की कुछ सम्भावनाएँ कम हो रही है।

निष्कर्ष :–

रीवा संभाग में ग्रामीण विकास योजनाओं के कारण आज ग्रामीण समुदाय में पक्के माकान बनाये जा रहे हैं। शौचालय का प्रयोग लोगों में घरों में बनाबा कर रहें है। इससे व्यक्ति के सामाजिक विकास के आयाम को तय करता है। उन्हें व्यवसायिक दृष्टि से उद्योग विभाग से ऋण प्रदान की जा रही है। इससे ग्रामीण और शहरी दोनों जगहों में इसका लाभ लोगों को मिल रहा है। इससे सामाजिक स्तर में अमूल–चूल वृद्धि हो रही है। इससे भौगोलिक और व्यवसायिक समस्याओं को निदान मिलेगा। गरीब मजदूर व्यक्ति भी आसानी से अपना जीवन यापन करेंगा।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

सन्दर्भ :–

1. उद्यमिता विकास केन्द्र, मध्यप्रदेश, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम, समूह हेतु मार्गदशिका, सेडमेप भोपाल, 2002, पृष्ठ 50
2. मध्याह्न भोजन– एक प्रवेशिका, रोजी–रोटी अधिकार अभियान, सचिवालय, नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण, नवम्बर, 2007, पृष्ठ 8
3. पर्यावरण भूगोल, पृष्ठ 15
4. नगरीय भूगोल, पृष्ठ 18
5. सिद्धकी, एस. ए. वर्ष 2003, म0 प्र0 सम्पूर्ण अध्ययन, उपकार प्रकाशन।
6. करन एम.पी., : नगरीय भूगोल, किताब घर आचार्य नगर कानपुर, चतुर्थ संस्करण 1987, पृष्ठ 241–45
7. एन्डरसन एवं ईश्वरन : quated in सुरेशचन्द्र बंशल, नगरीय भूगोल, उपरोक्तानुसार, पृष्ठ 465.
8. रेड्डी, एन.बी.के. : Urban Evolution growth pattern and urbanization. Traends in krishna & Godavari delta N.G.J(xvi) part III rt & IV. PP .50
9. कुरूक्षेत्र" कृषि मंत्रालय, ग्रामीण विकास विभाग भारत सरकार, नई दिल्ली, मई 1998, पृष्ठ 28

Filename:	20
Directory:	C:\Users\DELL\Documents
Template:	C:\Users\DELL\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:	
Subject:	
Author:	Windows User
Keywords:	
Comments:	
Creation Date:	12/21/2020 11:11:00 AM
Change Number:	17
Last Saved On:	4/30/2021 1:52:00 PM
Last Saved By:	Windows User
Total Editing Time:	62 Minutes
Last Printed On:	5/1/2021 4:29:00 PM

As of Last Complete Printing

Number of Pages:	6
Number of Words:	1 (approx.)
Number of Characters:	7 (approx.)